Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ छठ सूर्य अर्घ्य विधि ॥

॥ छठी मैया सबका मंगल करें ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ संध्या अर्घ्य की तैयारी ॥

छठ का तीसरा दिन शुक्ल षष्ठी का संध्या अर्घ्य है। इसी दिन डूबते सूर्य को जल अर्पित करने की विशेष परंपरा है। चौथे दिन शुक्ल सप्तमी की भोर उगते सूर्य को उषा अर्घ्य दिया जाता है। दोनों का स्थान, समय और क्रम पहले जान लें।

डाला और प्रसाद

बाँस का सूप या डाला, जल या दूध का पात्र, मौसमी फल, नारियल, गन्ना और घर में बना ठेकुआ या अन्य प्रसाद अपनी रीति से रखें। सामग्री की संख्या निश्चित और अनिवार्य नहीं है। फल धोकर रखें और चढ़ावे को स्वच्छ कपड़े से ढकें।

घाट और सुरक्षा

घाट पर जाने से पहले फिसलन, पानी की गहराई और भीड़ का ध्यान रखें। बच्चों के साथ वयस्क रहें। बहुत गहरे पानी में न जाएँ; जल में उतरना संभव न हो तो सुरक्षित किनारे से अर्घ्य दिया जा सकता है। स्थानीय व्यवस्था के निर्देश मानें।

सूर्यास्त का समय

अपने शहर का सूर्यास्त समय देखकर समय से पहले पहुँचें। घाट तक यात्रा में भीड़ हो सकती है। घर की छत, आँगन या अन्य सुरक्षित स्थान पर पूजा की परंपरा हो तो वहाँ से भी साफ जल के साथ प्रार्थना की जा सकती है।

॥ डूबते सूर्य को संध्या अर्घ्य ॥

१. पूजा-स्थल पर खड़े हों

सुरक्षित स्थान पर सूप में प्रसाद रखें। सूर्यदेव की ओर ध्यान करके दोनों हाथों से सूप संभालें। परिवार का सदस्य जल का पात्र पकड़ा सकता है। पानी में खड़े रहने की अवधि स्वास्थ्य के अनुसार रखें।

२. जल अर्पित करें

सूर्यास्त के समय अपनी परंपरा के अनुसार जल से अर्घ्य दें। छठी मैया और सूर्यदेव का स्मरण करें तथा परिवार, समाज और प्रकृति के कल्याण की प्रार्थना करें। मंत्र का विशिष्ट रूप घर के बड़े या पुरोहित से जानें।

३. रात्रि की तैयारी

अर्घ्य के बाद घर लौटकर सुबह के लिए डाला व्यवस्थित रखें। कुछ घरों में कोसी भरने, गन्ने के मंडप और दीपक की रीति होती है; यह सबके लिए अनिवार्य नहीं। दीपक के पास बच्चों को अकेला न छोड़ें।

अर्घ्य के समय सूर्य को सीधे अधिक देर तक न देखें। घनी भीड़ या अंधेरे में जल में उतरने का जोखिम न लें।

॥ ॐ सूर्याय नमः ॥

HarGharPanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ उगते सूर्य को उषा अर्घ्य ॥

भोर में घाट पहुँचना

चौथे दिन स्थानीय सूर्योदय से पहले घाट या सुरक्षित पूजा-स्थान पर पहुँचे। स्वच्छ जल, सूप और बचा प्रसाद तैयार रखें। ठंडी हवा, गीली सीढ़ियों और भीड़ में सावधानी बरतें। घर के सदस्य व्रती के साथ रहें।

उषा अर्घ्य

सूर्य निकलने पर उगते सूर्य को अपनी रीति से जल अर्पित करें। यह छठ की अंतिम मुख्य पूजा है। परिवार के मंगल के लिए प्रार्थना करें और सूर्यदेव तथा छठी मैया को प्रणाम करें। अर्घ्य की गिनती क्षेत्रीय रीति से बदलती है।

पूजा के बाद

अर्घ्य के बाद सुरक्षित ढंग से घर लौटें, प्रसाद बाँटें और अपनी पारिवारिक रीति के अनुसार पारण करें। घाट पर प्लास्टिक और पूजा की अनुपयोगी सामग्री न छोड़ें; प्राकृतिक जल को स्वच्छ रखने में सहयोग दें।

सूर्यास्त और सूर्योदय का समय स्थान तथा वर्ष से बदलता है। किसी दूसरे शहर का समय न अपनाएँ।

॥ सूर्यदेव और छठी मैया का आशीर्वाद ॥

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"